एक कीड़ा और भारत का इतिहास

पांच करोड़ साल पुराना कीड़े का जीवाश्म भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास पर नई रोशनी डाल रहा है। यह जीवाश्म पांच करोड़ वर्ष पूर्व किसी पौधे से निकले रेज़िन (एंबर) में फंसकर ज़िन्दा दफन हो गया था।

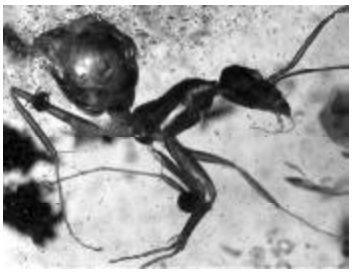

गौरतलब है कि धरती के महाद्वीप एक जगह टिके नहीं रहते हैं बल्कि गतिशील रहते हैं। भारत नामक भूभाग करोड़ों वर्ष पूर्व किसी अन्य महाद्वीप से टूटकर अलग हुआ था और फिर तैरते-तैरते यूरेशिया से टकराया। इन दो घटनाओं के बीच करोड़ों वर्षों तक भारतीय भूभाग एक द्वीप की तरह शेष महाद्वीपों से अलग-थलग रहा था। मगर भारतीय भूभाग पर उस काल के जीवाश्मों को देखकर नहीं लगता कि यहां कोई विशिष्ट जैव प्रजातियां अस्तित्व में आई थीं। यदि यह भूखंड पूरी तरह अलग-थलग रहा होता तो यहां कुछ अनोखी प्रजातियां ज़रूर विकसित होतीं।

इससे पता चलता है कि संभवतः भारतीय भूखंड़ छोटे-छोटे द्वीपों की श्रृंखला के ज़रिए एशिया से जुड़ा था। इस बात का और अध्ययन करने के लिए बॉन विश्वविद्यालय के जेस रस्ट ने गुजरात के खंभात क्षेत्र से करीब 150 किलोग्राम एंबर इकट्ठा किया। एंबर पौधों से रिसने वाला गोंद होता है। यह एंबर उस काल का है जब भारत एशिया से टकराने ही वाला था। इसमें 700 से ज़्यादा कीड़े-मकोड़े फंसे हुए मिले हैं।

इनमें से कई कीड़े उस समय यूरेशिया में पाए जाने वाले कीड़ों के समान ही हैं। इससे लगता है कि उस दौर में भारतीय भूखंड और दक्षिणी एशिया को जोड़ने वाले द्वीपों की श्रृंखला रही होगी और जीवों का आवागमन बना रहा होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***